Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 3 | MARCH 2024

भारत में धर्म और राजनीति : ऐतिहासिक समीक्षा

प्रवीण कुमार [1]

[1] **नैट, राजनीति विज्ञान, सहायक आचार्य, वीएसवाई.**

ABSTRACT:

प्राचीन भारतीय राज्य व्यवस्था के विकास में वर्ण के अतिरिक्त धर्म का भी महत्वपूर्ण योग दिखाई देता है। प्राचीन भारत में धर्म और राजनीति के घनिष्ठ संबंध का संकेत हमें सर्वप्रथम वैदिक कर्मकांडों में मिलता है। कौटिल्य ने अपने ग्रंथ में राजनीति को सुदृढ़ करने के लिए धार्मिक विधानों का प्रावधान किया है। 1947 तक धर्म और राजनीति के बीच घनिष्ठ अंतःक्रिया थी लेकिन इस दौरान इस अंतःक्रिया की प्रवृत्ति में गहनता और उसके स्वरूप में अंतर दिखाई देता है।

KEYWORDS:

अर्थशास्त्र, पूर्व औपनिवेशक भारत, समकालीन भारत, धर्मनिरपेक्षता।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
29th March 2024	30th March 2024

विषय प्रवेश

प्राचीन भारत में धर्म और राजनीति के घनिष्ठ संबंध का संकेत सर्वप्रथम वैदिक कर्मकांडों में मिलता है। वैदिकोत्तर काल में जब राजतंत्र का आधार सुदृढ़ हो गया था तब इस संबंध का रूप भी बदल गया था। वैदिक कर्मकांड यदि राजा की सत्ता को सुदृढ़ करते थे तो साथ ही उस पर अंकुश भी लगाते थे। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से हमें राज्य द्वारा किये गए जिन धार्मिक विधानों और कर्यों की जानकारी मिलती है। उनका उद्देश्य राजा की सत्ता को सीमित करने की बजाय उसको सुदृढ़ता प्रदान करना था। अर्थशास्त्र से प्रकट होता है कि, राज्य की आंतरिक नीति के निर्धारण में और बाहरी शत्रुओं से निपटने में धर्म का उपयोग प्रभावकारी ढंग से किया जाता था। धर्म क्या है? और अधर्म क्या है? इस विषय पर अर्थशास्त्र की मान्यता तीन वेदों पर आधारित है। कौटिल्य के राज्य की विदेशनीति के निर्धारण में भी धर्म का महत्वपूर्ण स्थान है। विजित लोगों का शमन करने के लिए राजा से उनके धार्मिक रीती रिवाजों और भावनाओं की ओर ध्यान देने को कहा गया है।

पूर्व औपनिवेशिक भारत में पवित्र और धर्मनिरपेक्ष परिप्रेक्ष्य अत्यंत गुंथे हुए थे। भारतीय समाज निरंतर होने वाले परिवर्तनों का साक्षी रहा है। जिन्होंने राजनीतिक पद्धतियों, व्यावसायिक संरचनाओं, संस्कृति और धर्म को प्रभावित किया। भारत में धर्म तनाव नवीनता और यहाँ तक कि, आधुनीकिकरण का भी प्रमुख स्रोत रहा है। भारत में परिवर्तन प्रारंभ करने में खासतौर से राजनीतिक आंदोलनों और सुधार आंदोलनों में परिवर्तन लाने में धार्मिक मुहावरों का प्रयोग महत्वपूर्ण रहा है।

उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में अनेक सामाजिक सुधार आंदोलन हुए। हालांकि ब्रिटिश शासन ने प्रशासन, परिवहन, संचार और अर्थव्यवस्था में तो दूरगामी परिवर्तन किए लेकिन इसने पारंपरिक सामाजिक बंधनों में व्यवधान उत्पन्न किया और संस्कृति को विखंडित भी किया। इसी समय बंगाल में राजा राममोहन राय, उत्तर में दयानंद सरस्वती, महाराष्ट्र में ज्योतिबा फुले ने शिक्षा में सुधार और सामाजिक धार्मिक लक्ष्य प्रारंभ किए और राष्ट्रीय जीवन के बारे में नजरिया भी प्रदान किया। उन्होंने भारतीय परंपरा तथा पश्चिमी ज्ञान दोनों से प्रेरणा ली। वे तर्कवादी और उदार सिद्धांतों से प्रभावित थे। जिनके अनुसार समाज की मूल इकाई एक व्यक्ति था जिसे नागरिक और मानव के रूप में देखा जाता था। स्त्रियों और पुरुषों के लिए स्कूल और कॉलेज प्रवर्तित करने में उन्होंने संगठन की पश्चिमी विधियों का प्रयोग किया।

महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक ने गणपति पूजा को बड़े पैमाने पर दोबारा प्रचलित किया। बंगाल में राज बिहारी घोष, विपिन चन्द्र पाल और उनके साथियों ने राजनीतिक चेतना विकसित करने के लिए दुर्गा पूजा के इर्द-गिर्द केंद्रित धार्मिक प्रतीकों का प्रयोग किया। इसके अतिरिक्त भारत के इन प्रांतों और अन्य प्रांतों में सामाजिक, धार्मिक नाटकों द्वारा जनता को राजनीतिक संदेश प्रदान किए गए। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान गाँधी जी ने अधिसंख्यक भारतीय जनता को एकीकृत और संगठित करने तथा गतिशील बनाने के लिए 'रामराज्य' की हिंदू धारणा को प्रवृत्त किया।

समकालीन भारत में धर्म और राजनीति

आज भारत में मुख्यतः जिन विषयों पर बहस केंद्रित की जा रही है वे हैं सांप्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता, रूढ़ीवाद, धार्मिक राष्ट्रवाद। समकालीन भारत में धर्म और राजनीति को विकास की एक भिन्न अवस्था से गुजरते हुए देखा जा सकता है जहाँ व्यक्तियों की गतिविधियों को धर्म की बजाय अन्य स्वार्थ निर्देशित करते हुए प्रतीत होते हैं।

ज्ञानेंद्र पाण्डेय, सेन्द्रिओ फ्रीटेश, आयशा जलाल जैसे इतिहासकारों के एक समूह ने भारत के सांप्रदायिक झगड़ों के बारे में मत प्रकट किया कि, हिंदू मुस्लिम चेतना और दृढ़ द्वंद काफी हद तक आधुनिक निर्मितियां हैं। जिनमें ब्रिटिश उपनिवेशी शासकों ने प्रमुख भूमिका निभाई है। उन्होंने सोची समझी 'फूट डालो और राज़ करो' नीतियों द्वारा या ऐसे तरीकों द्वारा जिनमें उन्होंने भारत की विविध जनता को श्रेणीकृत वर्गीकृत और विशिष्टि कृत करने के तरीके के द्वारा यह भूमिका निभाई है। इसका एक उदाहरण है कि, उन्होंने कुछ जनजातियों को अपराधी जनजातियों के रूप में श्रेणीबद्ध किया। हिंदू और मुस्लिम सांप्रदायिक चेतना या सांप्रदायिकता के यह व्याख्यात्मक विचार विचारधारा के स्वरूपों के रूप में वर्ग समूह और संभ्रांत राजनीतिक हितों से संबद्ध हो जाते हैं। इस प्रकार उनके लिये सांप्रदायिक चेतना की वृद्धि संघर्ष का एक साधन है। या तो ब्रिटिश के विरुद्ध संघर्ष अथवा राजनीतिक लाभ और प्रभुत्व के लिये हिंदू और मुसलमानों के बीच संघर्ष। संघर्ष के दौरान होने वाली सांप्रदायिक हिंसा अकसर सांप्रदायिक प्रवचन के अंतर्गत रचित द्वन्दों का परिणाम थी। उनका मानना था कि, सांप्रदायिकता एक आवरण है जो मुख्यतः राजनीतिक और आर्थिक कारणों की विविधता को छुपा लेता है।

आधुनिक भारत में हम अभी भी अतीत के उपनिवेशी शासकों की 'फूट डालो और राज़ करो' नीति के चिन्ह देखते हैं। भारत में दो सबसे बड़े समुदायों हिंदू और मुसलमानों के बीच बड़े विभाजन की ओर ले जाने वाला मन में जमा हुआ विचार राष्ट्र के राजनीतिक वातावरण तथा इसके विभिन्न धर्मों के अनुसार घटता बढ़ता रहता है। उप महाद्वीप में बहुजातीय हिंदू और मुसलमानों की ओर से आत्म निर्धारण का दावा शामिल है। सत्ता के लिए उन संघर्षों

के दौरान जो ब्रिटिश शासन के दौरान विकसित हुए थे और 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में तीव्र हुए और 1947 में भारत के विभाजन में पराकाष्ठा पर पहुंचे थे। हिंदू मुस्लिम भेद भावों का लेखा जोखा बनाया गया जिसने दोनों समुदायों में गहरी जड़ें जमाई और आंशिक रूप से स्व-संपोषित संवेग अर्जित किया है जो साथ ही साथ राजनीतिक प्रतियोगिता द्वारा भी पोषित होता रहता है।

असगर अली इंजीनियर हिंदू मुस्लिम दंगों पर लिखते हैं कि, "सांप्रदायिक द्वंद का धर्म से ज्यादा संबंध नहीं है, बल्कि राजनीतिज्ञों द्वारा अपने निहित स्वार्थों के लिए इसके प्रयोग से ज्यादा संबंध है। सम्प्रदायों के रूप में न तो हिन्दुओं और न ही मुसलमानों का सांप्रदायिक दंगे भड़काने के लिए कोई दोष है। उनके विचार से एक ओर तो राजनीतिज्ञ और दूसरी ओर हिंदू मुस्लिम के बीच आर्थिक प्रतियोगिता सांप्रदायिक दंगों को भड़काने के लिए उत्तरदायी हैं"। रामशिला पूजन और बाबरी मस्जिद विध्वंस के दौरान देशभर में सांप्रदायिक दंगे भड़के थे। असगर अली के विचार से भारत में सांप्रदायिक दंगों का प्रमुख कारण हैं किसी भी कीमत पर राजनीतिक लाभ की प्राप्ति का लक्ष्य।

धर्मनिरपेक्षता

भारत में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है विभिन्न विश्वासों (धर्म) के अनुयायी नागरिकों के साथ व्यवहार करने में राज्य द्वारा निष्पक्षता का बर्ताव अर्थात सर्व-धर्म समभाव राष्ट्रीय संविधान में धर्मनिरपेक्ष भारतीय राज्य व्यवस्था के भविष्य निरूपण के बारे में राष्ट्रीय मतैक्य प्रतिबिंबित होता है जो राष्ट्रीय संग्राम के दौरान उत्पन्न हुआ था। भारत की धर्मनिरपेक्षता पर भारतीय जनता के अद्वैतवादी विश्व दर्शन के प्रभावों के साथ-साथ भारत के बहु समाज और भारत के अनुभव के प्रभावों की भी धारणा प्रतिबिंबित होती है। भारत में धर्मनिरपेक्षता के प्रयोग के बारे में बुद्धिवादियों में संदेह बढ़ता जा रहा है कि, धर्मनिरपेक्षता भारत के लिए अच्छी है या नहीं, खासतौर से पिछले दशकों में देखी गई राजनीतिक और सामाजिक उथल-पुथल के परिणामस्वरूप यह संदेह और बढ़ रहा है।

धर्मनिरपेक्षता की आवश्यकता इसलिए नहीं है कि, मानव मामलों से धार्मिक भावावेश को दूर कर देगा। बल्कि इसलिए है कि, यह कुछ हद तक जन जीवन में धार्मिक भावावेश की अभिव्यक्ति को निष्क्रिय और हल्का कर देगा। कोई भी कितने भी प्रबल रूप से यह इच्छा करे कि, धर्म और राजनीति अलग रहे, किसी लोकतंत्र में राजनीतिक नेताओं को धार्मिक भावनाओं से अनुचित लाभ उठाने से रोकना या धार्मिक नेताओं को राजनीतिक मैत्री करने का प्रयत्न करने से रोकना असंभव है।

भारत में जन राजनीति के लिए धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद और धार्मिक राष्ट्रवाद दो सर्वाधिक महत्वपूर्ण संगठनात्मक साधन रहे हैं, जिन्होंने राजनीति में भावावेश उत्पन्न किये हैं- जो कभी कभार बहुत हिंसात्मक भी थे। इसने मुख्यतः दो स्वरूप अपनाये हैं। मुस्लिम और हिंदू राष्ट्रवाद। मुस्लिम राष्ट्रवाद 20वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में उभरा। इसके कारण 1947 में पाकिस्तान का जन्म हुआ।

भारतीय संविधान में धर्मनिरपेक्षता शब्द को 42वें संविधान संशोधन द्वारा जोड़ा गया। संविधान के विभिन्न उपबंधों द्वारा धर्मनिरपेक्षता की व्यवस्था की गई है।

निष्कर्ष

भारत में धर्म और राजनीति का परस्पर संबंध अनादिकाल से रहा है। धर्म और राजनीति अभिन्न अंग हैं। वे एक जटिल रूप में हमेशा से ही आपस में जुड़े रहे हैं। भारतीय राजव्यवस्था उपमहाद्वीप और जटिल है। बहुलवाद इसकी विशेषता है। धर्म ने विभिन्न कालखंडों में राजनीति को प्रभावित किया है तथा सामाजिक आर्थिक परिवर्तनों को भी जन्म दिया है। जिनसे समाज में विभिन्न प्रवृतियों का जन्म हुआ जो समाज के लिये उपयोगी भी रही और अनुपयोगी भी।

REFERENCES

1. रामशरण शर्मा - प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार एवं संस्थाएँ
2. इमाइल दुर्खीम - एलिमेंट्री फार्म्स ऑफ रिलिजियस लाइफ
3. टी.एन. मदान - रिलीजियस इन इंडिया